KALA SOPAN MULTIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL
(A Peer Reviewed Journal)
Volume 01, Issue 01, January 2024
©2024

बुंदेलखण्ड में गोसाईयों का राजनैतिक एवं सास्कृतिक परिचय

माधवी निराला
शोधार्थी,ललित कला संस्थान, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी

सारांश
गोसांई साधु सन्यासी के रूप में अपना जीवन व्यतीत करते थे। यह शिव के उपासक थे। इनका आगमन बुंदेलखंड में मराठा आगमन के साथ ही मानते हैं। यह बलशाली होने के कारण सैन्य बल भी शासकों को प्रदान करते थे, जिसमें राजेंद्र गिरी और अनूप गिरी की सैन्य टुकड़ियाँ बहुत मजबूत रही हैं। इसी के साथ गोसाई साधु सन्यासियों ने वास्तुकला का भी विकास किया जिसके अंदर और बाहर मूर्तिकला, चित्रकला का निर्माण कराया और बुंदेलखंड को एक अनूठी धरोहर का धनी बनाया। इस सम्प्रदाय के मूल्यों के बारे में शोध पत्र में बताया गया है। जिस प्रकार गोसाईयों ने राजनैतिक, समाजिक गतिविधियों को प्रभावित किया उतना ही सहयोग इन लोगों का सांस्कृतिक गतिविधियों में रहा है। गोसाईयों ने बुन्देलखण्ड में एक अलग कला शैली को जन्म दिया। शोध पत्र के अन्तर्गत इन सभी विषयों पर प्रकाश डाला गया है।
मुख्य शब्द – गोसांई, राजनैतिक स्थिति, सांस्कृतिक स्थिति, वास्तुकला, मूर्तिकला, चित्रकला।

गोसाईयों का परिचय–
गोसाई परम्परागत रूप से धार्मिक भिक्षुओं का एक समुदाय है जो बेघर भटकने वाले बैरागी साधु तपस्वी हैं। जो साधु बनने के लिए सांसारिक सुखों का त्याग करते थे। यह शिव की उपासना करते हैं। क्यों कि वे उनके इष्टदेव हैं, गुरु है और वह लोग इनके शिष्य हैं। सभी गोसाईं साधु अपनी भक्ति के लिए शिवलिंग की पूजा करते हैं। साहित्यिक साक्ष्यों के अनुसार गोसाई साधुओं की उत्पत्ति जगतगुरु शंकराचार्य के अनुयायियों से हुई है। कहा गया है कि गुरु शंकराचार्य के चार प्रमुख शिष्य रहे हैं जो इस प्रकार हैं – पदम पाद, हस्तामलक, मण्डन और तोटक और इनके भी शिष्य रहे हैं,2 जिनमें –

- मण्डन के तीन शिष्य – गिरी ,पर्वत एवं सागर
- पदमपाद के दो शिष्य– तीर्थ और आश्रम
- तोटक के तीन शिष्य– भारती, सरस्वती और पूरी
- हस्तामलक के दो शिष्य– वन और आरण्यक रहे है।

इन सभी शिष्यों को ही गोसांई सन्यासी के 10 वर्ग कहे गए हैं। ये सभी सन्यासी अध्यात्मिक शक्ति के साथ धर्म और अपने गांव वासियों, राजाओं के रक्षार्थ हेतु शस्त्र भी धारण करते थे। मुख्य रूप से यह एक सैन्य टुकड़ियों के रूप में भी जाने जाते थे। यह अधिक बलशाली सन्यासी भी होते थे। देश वासियों के ऊपर अधिक शोषण किया जा रहा था। देशी उद्योगों को नष्ट करना, कठोर राजस्व प्रणाली लागू करना, इन्हीं सब कारणों एवं प्राकृतिक आपदाओं के कारण अकाल, बेरोजगारी, भुखमरी जैसी कई

समस्याओं से जनमानस परेशान था। इसी सभी परेशानियों को देखकर धर्म कार्य में लगे बलशाली गुसाईं साधु सन्यासियों ने जनमानस रक्षा हेतु एकत्रित होकर अपने संगठन का निर्माण किया और यहीं से यह लोगों के हितों के लिए सैनिक कार्यों में लग गये।

बुंदेलखंड में गोसाई सन्यासियों का आगमन एवं राजनैतिक स्थिति–

बुंदेलखंड में गोसाई सत्ता का उदय तथा पतन इस क्षेत्र के इतिहास की एक गौरवमयी गाथा है। उत्तर 18वीं शताब्दी के पूवार्द्ध में बुंदेलखंड के अंदर गोसाई शक्ति का उद्भव एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटना मानी जाती है।5 बुंदेलखंड के मध्यकालीन इतिहास में गोसाईयों का विवरण सर्वप्रथम दतिया के राजा दलपत राव के समय में मिलता है। दलपत राव मुगल सम्राट औरुंगजेब (1657–1707) के समय दक्षिण में अदोनी के फौजदार थे। साहित्य अवलोकन के अनुसार 20 जुलाई 1688 ई० में दलपत राव दतिया आए थे और उस समय दतिया के प्रशिद्ध गोसाई साधु महादेव गिरी को भाण्डेर परगने का "डगरई" नामक गांव के मंदिर के लिए जागीर में लगा दिया।6

इस समय यह दतिया क्षेत्र में गिरी साधुओं ने कई स्थान पर मदिर स्थापित कराए और इनमें सबसे प्रमुख मंदिर शिवगिरी का मंदिर जो भगवान शिव को समर्पित है और इस मंदिर में गोसाई साधुओं की घुड़सवार आकृतियॉ उकेरी भी गई है। इस मंदिर का निर्माण राजा शत्रुजीत (1762–1801ई०) ने कराया था। साहित्यिक अवलोकन के अनुसार बुंदेलखंड में गोसाई संतो की परंपरा अति प्राचीन है और शिवगिरी महंत से पहले भी इनकी छै पीढियॉ गुजर चुकी थी जिनमें से एक "बाबा महादेव गिरी" थे।13

बुंदेलखंड में गोसाईयों का मुख्य केंद्र दतिया रहा है। राजेंद्र गिरी दतिया के ही निवासी थे। ध्यान गिरी जो दतिया के गोसाई महंत थे इन्हीं के शिष्य राजेंद्र गिरी को बताया जाता है और यह बाद में आकर झांसी में बस गए। राजेंद्र गिरी (1751–1753 ई०) नागा गोसाई सन्यासी था। यह पूर्ण रूप से नागा नहीं होते थे। यह अपने निचले भाग पर लाल रंग का लंगोट पहनते थे और इनके एक हाथ में शस्त्र दूसरे हाथ में अस्त्र होता था। यही कारण था कि यह लोगों पर अपना विश्वास कायम कर लेते थे। गोसाई की राजनैतिक स्थिति का उदय हम राजेंद्र गिरी से मान सकते हैं। झांसी नगर पर राजेंद्र गिरी का शासन काल ही गोसाईयों का उदय का समय माना जा सकता है। एक कथा के अनुसार– गोसाई सन्यासी राजेन्द्र गिरी कुलपहाड़ गए थे। वहां पर एक विधवा महिला (सनाड्य) से भेंट होती है और वह अपने दो छोटे बेटों को महंत राजेंद्र गिरी को दे देती हैं जिन्हें राजेंद्र गिरी अपने साथ झांसी ले आते हैं और इनको अपना सानिध्य प्रदान करते हैं और यह दोनों आगे चल कर महान सैनिक के रूप में सामने आते हैं। इन दो बालकों का नाम उमराव गिरी (बड़ा भाई) और अनूप गिरी (छोटा भाई) रखा है। अनूप गिरी ने नवाब शुजाउद्दौला, बांदा एवं मराठा के नवाबों को अपना सानिध्य देकर युद्ध की महान सफलता हासिल की।

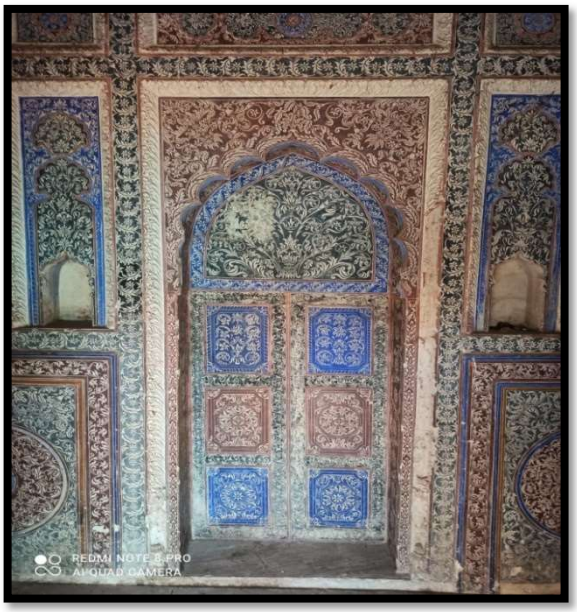

सन 1729 ई० में मुगल सूबेदार मोहम्मद खां बंगश जिसने छैः महीने से जैतपुर का किला घेरे हुए था। मोहम्मद खान बंगश से छुटकारा पाने और केले को आजाद कराने के लिए बुंदेला राजा छत्रसाल जी बाजीरॉव प्रथम से ससैन्य सहायता मांगते हैं और बाजीरॉव प्रथम की सहायता से ही मुगल सूबेदार मोहम्मद का बंगश अपने पैर पीछे हटाने पर मजबूर हो गया। इस सामायिक सहायता के कारण ही छत्रसाल ने अपना राज्य का तृतीय भाग बाजीरॉव को दे दिया। इस मिले भूभाग पर बाजीरॉव ने अपने सूबेदार नियुक्त किए। बाजीरॉव ने 1742 ई० में अपना प्रथम सूबेदार नारो शंकर (1742– 1756 ई०) को झांसी का सूबेदार नियुक्त किया। उस समय वीर सिह देव (1606–1625 ई०) द्वारा निर्मित झांसी दुर्ग के सम्पूर्ण स्थान पर गोसाई साधुओं का आधिपत्य था जिसमें गोसाई के मठ, अखाड़े, हवेलियां, खेत, बाग एवं शिवालय स्थित थे। साहित्य अवलोकन के अनुसार रानी लक्ष्मीबाई से पूर्व गोसाईयो के अखाड़े मठ मौजूद थे। जिसमें

आभात, आखात और नागा नामक मठ स्थित थे। जिसमें गोसाईपुरा, ओरछा गेट (अंदर–बाहर), फूटा चौपड़ा और गणेश बाजार आदि में स्थित थे।

इसी के साथ अमरा (अमरगढ़) भी गोसाई के अधिकार में था। ये सब नारो शंकर से देखा नहीं गया। नारो शंकर ने गोसाई साधु से झांसी खाली करने को कहा। गोसाई साधु को झांसी से हटाने के लिए सैन्य शक्ति (युद्ध) किया। यह युद्ध दो दिन चला। गोसाईयों की सेना का नेतृत्व राजेंद्रगिरी कर रहे थे। नारो शंकर इस युद्ध में झांसी दुर्ग अधिपत्य प्राप्त नहीं कर पाया। इसके साथ राजेंद्र गिरी से इसने एक संधी की जिसमें गिरी को 32 मील दूर मोंठ गांव की जागीर दे दी। यहां पर राजेंद्रगिरी ने एक गिढ़ी का निर्माण कर लिया और मोठ से ही राजेंद्रगिरी ने बलशाली अपनी नागा पलटन तैयार की और इन्हीं के साथ मिलकर सैनिक छावनी बना ली।

देखते ही देखते राजेंद्रगिरी ने मोठ के आसपास के आस पास गांवो पर भी अधिकार कर लिया।2 सन 1750 ई० में झांसी के सूबेदार नारो शंकर ने अपने पूरे सैन्य दल के साथ मोठ पर हमला कर दिया। इस अचानक हुए आक्रमण से राजेंद्र गिरी अपने और अपने साथी के बचाव के लिए तैयार ना थे इसीलिए इन्हें मोठ छोड़ कर भागना पड़। यहां से भागे राजेंद्रगिरी की सैन्य टुकड़ी इलाहाबाद जाकर नवाब सफदरजंग का आश्रय लेते हैं और इनको अपनी सैन्य सेवाय प्रदान करते है।

राजेन्द्रगिरी को सफदरगंज ने अपनी फौज का प्रमुख अधिकारी बना दिया। राजेंद्र गिरी की इमादुल्मुल्क से युद्ध करते समय दिल्ली में 14 जून 1753 ई० में मृत्यु हो गई। इनकी मत्यु के बाद उमराव गिरी को नवाब सफदरजंग ने सैन्य दल का सेनानायक बनाया और सैन्य संचालन अनूपगिरी करता था।3 इन दोनों भाइयों में अपने अंत समय तक कोई भी मनमुटाव नहीं हुआ बल्कि अपनी जान से ज्यादा अपने भाई को प्यार करते थे। उमराव गिरी और अनूप गिरी ने लंबे समय तक अवध के नवाबों की सेवा की।

अनूप गिरी को राजा "**हिम्मत बहादुर**" की उपाधि दी गई। यह दोनों बांदा मराठों के राजाओं एवं अग्रेजों की सेवा में रहे। इसी के साथ बुंदेलखंड में मराठा सत्ता के पतन और अंग्रेजी सत्ता की शुरूआत तक बुंदेलखंड में कई वषों तक यहां की राजनैतिक स्थिति में गोसाई सन्यासी का वर्चस्व रहा।

गोसाईयो की संस्कृति–

गुसाई संन्यासियों ने बुंदेलखंड की राजनीतिक, सामाजिक गतिविधियों को जितना प्रभावित किया उतना ही गोसाई सुन्यासियों ने सांस्कृतिक गतिविधियों को भी प्रभावित किया। मूल रूप से यह सन्यासी थे। इसी कारण इनका पहनने–ओड़ने और जीवन यापन का तरीका भी एक सन्यासी के रूप में रहा है। 18वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में गोसाईं सन्यासी ने झांसी दतिया के आसपास अन्य क्षेत्रों में वास्तु कला मूर्तिकला चित्रकला का विकास किया जिसमें उन्होंने मठ मंदिर समाधि, मंदिर, दुर्ग, गढी का निर्माण कराया और इसी के अंदर बाहर चित्रकला और मंदिरों के अंदर मूर्तिकला का भी निर्माण कराया।9 इनकी सांस्कृतिक गतिविधियों पर हम जैसे चित्रकला, मूर्तिकला, स्थापत्य कला पर बुंदेली शैली, चंदेल कालीन शैली, मुगल शैली, मराठा शैली, राजस्थानी शैली का प्रभाव देखने को मिलता है।1 मंदिरों का निर्माण नागर शैली में किया गया हैं।

स्थापत्य शैली–

गोसांई शासक शंकराचार्य के शिष्य के रूप में शैव अनुयाई रहे तथा उन्होंने अधिकांश शैव धर्म से संम्बधित मन्दिरों का निर्माण कराया और इन लोगों में मत्यु उपरांत उनके शवों को अग्नि संस्कार ना करके इन्हें समाधिस्थ किया जाता था। उनकी समाधि पर मंदिरों को बनाकर शिवलिंग स्थापित किया जाता था। गोसाई सन्यासी द्वारा अनेक बागों का भी निर्माणि कराया। साथ ही यह मंदिर के आस–पास कुंओ का भी निर्माण कराते थे। गोसाईयो की स्थापत्य कला शैली को चार रूप में देख सकते हैं दुर्ग, गढ़ि, समाधि मंदिर, मन्दिर, व मढ।10

कुछ स्थापत्य कला शैली के नाम–

- पहला मोठ की गढ़ी 1745 राजेंद्र गिरी
- अमरा की गढ़ी राजेंद्र गिरी अमरगढ़ में स्थित है। जिसका निर्माण गोसाई शासक सन्यासी/सैनिक राजेंद्र गिरी द्वारा करवाया गया था।
- धर्मशाला का मंदिर।
- छनिया पुरा में स्थित गोसाई समाधि।
- फूटा चौपड़ा में स्थित समाधि मंदिर।
- पानी वाली धर्मशाला में शिव मंदिर।

- मढ़िया महादेव मंदिर सुगंधी पुरी के बाग में पांच मंदिर।
- दीक्षित बाग का शिव मंदिर।
- लक्ष्मी ताल का सिद्धेश्वर मंदिर।

मूर्तिकला–

गोसाई सन्यासियों ने मूर्तियों का निर्माण ज्यादातर मंदिरों के अन्दर–बाहर करवाया है। जिसमें मंदिर के गर्भ गृह में मुख्य शिवलिंग विराजमान होते हैं। शिवलिंग के पीछे लेटे हुए भगवान विष्णु की प्रतिमा विचार करते हुए नाभि से सृष्टि की उत्पत्ति करते हुए भगवान ब्रह्मा जी हैं। शिवलिंग के बाएं तरफ भगवान गणेश दाएं तरफ माता सरस्वती जी हैं। अंतराल में नंदी तथा अगल–बगल उत्कृष्ट अष्टभुजी माता देत्य को मारते हुए एवं अन्नपूर्णा जी विराजमान हैं व मण्डप में हनुमान जीव भैरव बाबा विराजमान है। मंदिरों के चारों कोनो में लघु मंदिर पंचतायन शैली में बने जिसमे भैरव बाबा, हनुमान जी, गणेश व एक अज्ञात देवी की मूर्ति स्थापित है।

इनकी मूर्तियां चंदेल, गुप्त, प्रतिहार जैसी मूर्तियों जितनी अलंकृत नहीं हैं, गोसाईं कालीन शिव मंदिर ही ऐसे हैं जिनके गर्भगृह तथा आगे के मंडप और प्रतिक्षणा की चर्तुमुखी दीवारों पर विभिन्न देव प्रतिमाओं के दर्शन होते हैं। झांसी के दीक्षित बाग के मंदिर में मूर्तियों के श्रेष्ठतम उदाहरण देखने को मिलते हैं।8 यह मूर्तियां मंदिर के गर्भगृह के अंदर बृहत् सहस्र–लिंगेश्वर के अतिरिक्त सप्ताश्वारूढ़ सूर्य भगवान अपने सारथी अरुण के साथ, वीणाधर, मां पार्वती, हंस वाहिनी सरस्वती, गणेश भगवान विष्णु, दुर्गा, पद्मासना व मकर वाहिनी गंगा प्रतिमाओं का भी प्रदर्शन हुआ है।7

चित्रकला –

गोसाई शाासकों द्वारा निर्मित स्मारकों में चित्रांकन किया गया है। गोसाई चित्रकला शैली में भी बुंदेली शैली, राजस्थानी शैली, मुगल चित्रकला शैली का समावेश देखने को मिलता है। चित्रों को ज्यादातर हम गोसाईं मंदिर के अंदर बाहर देखते हैं। जिसमें दतिया और झांसी क्षेत्र मुख्य रहे हैं। चित्रों में धार्मिक पौराणिक बेल–बूटे, गुलदस्ते, गोसाईं सैनिक पूजा करते हुए साधु, पशु–पक्षी आदि के चित्र देखने को मिलते हैं। मानवीय चित्रों के मानव मुख मंडल का

अंकन एक चश्म तथा पौने दो चश्म का किया गया है। गोसाई स्मारकों की छतरियों में छज्जो के टुंडों के मध्य छलाई द्वारा चित्र बनाए गए हैं। इनकी सफाई पर प्लास्टर किया गया तथा इसके ऊपर पुनः हिरमिजी मिला हुआ प्लास्टर किया गया उसके बाद मनचाहे रंगों को भरा गया। मंदिरों में बाहर दीवार पर डिजाइन बनाकर चूने के प्लास्टर को काटकर उत्कीर्ण विधि से चित्रों को देखा गया है।

मंदिर में कही–कही छोटे आलों में भी चित्र मिले हैं जिनमें शिव भगवान से संबंधित अनेक चित्र पार्वती, गणेश, ब्रह्मा, हाथी, मोर, पक्षी, शिव भगवान की बारात आदि चित्रों को देखते हैं।12 इन चित्रों के धरातल को लाल रंग लगाकर तूलिका के द्वारा सफेद रंग से रेखांकन कर दिया गया है। कहीं–कहीं रंगों को चित्रो में सपाट तरीके से भी भर दिया गया है। रंगों में लाल, पीले, नीले, हरे, काले और भूरे रंगों से चित्रांकन किया गया है।

निष्कर्ष

गोसाई संप्रदाय ने बुंदेलखंड को वास्तु, मूर्ति, चित्रकला के रूप में एक विशिष्ट पहचान दिलाई है। गोसाई कलाओं को बुंदेलखंड की धरोहर के रूप में एक अलग स्थान मिलना चाहिए। शोध पत्र लिखते समय भ्रमण किया तो पाया कि कुछ मंदिरों पर स्थानीय लोगों ने कब्जा कर अपनी मर्जी से इन धरोहरों को क्षति पहुचाई हैं। उनके चित्रों के महत्व को ना समझते हुए इन लोगों ने सभी चित्रों पर चूना पुतवा दिया है जिससे इनके मलू तत्व खो चुके हैं। पुरातत्व सर्वेक्षण को गोसाईयो की कलाओं को संरक्षित रखने के लिए कार्य करना चाहिए जिससे हमारे गोसाई साधु द्वारा दी गई कला का संरक्षण हो सके और आने वाली पीढ़ियों को उसके मूल्यों के बारे में समझाया जा सके ।

संदर्भ ग्रंथ सूची–.

1 त्रिवेदी डॉ० डी० एस० –– बुंदेलखंड का पुरातत्व. – प्रकाशन राजकीय संग्रहालय झांसी. (1984), पृ 63–132

2. जनरल एशियाटिक सोसायटी बंगाल (1789), पृ. 79

3 गुप्ता भगवान दास – मस्तानी बाजीराव और उनके बंशज बांदा के नवाव पृ. 49

4 यदु डॉ० हेमू – पर्यटन में देव मंदिर. बी० आर० पब्लिशिंग कॉर्पोरेशन, दिल्ली.(2014) पृ. 05–10

5. शेख सलीम – मैं झांसी हूँ 1857 से अब तक.– बेतवा प्रकाशन झांसी. (2007), पृ.04–07

6. Shah K. Krit: Ancient Bundelkhand – Gain Publishing Hous Delhi (1988) Page No. 50-53

7. शर्मा रोबिनः –सन्यासी जिसने अपनी संपत्ति बेच दी.– जयको पब्लिशिंग हॉउस मुंबई. (2005) पृ० 30–36

8. वर्मा डॉ० महेन्द्रः बुन्देलखण्ड की मूर्तिकला. –भारतीय कला प्रकाशन – दिल्ली(.2005) पृ. 210–214

9. श्रीवास्तव डॉ० रमेश चन्द्रः – बुन्देलखण्ड साहित्यिक ऐतिहासिक सांस्कृतिक वैभव.–बुन्देलखण्ड प्रकाशन बॉदा. पृ० 143–147.

10. गुप्त डॉ० भगवानदासः – मुगलों के अन्तर्गत बुन्देलखण्ड का सामाजिक आर्थिक और सांस्कृतिक इतिहास.– हिन्दी बुक सेन्टर नई दिल्ली.(1997), पृ० 143–146.

11. हजारी डॉ० राजाराम – प्राचीन भारत में तीर्थ, महाभारत के सन्दर्भ मे. शारदा पब्लिशिंग हाउस दिल्ली. (2003). पृ० 01–10.

12. शर्मा डॉ शिवकुमार श्रोत्रीय, डॉ० शुकदेवः चित्रण विधान एवं सामग्री. चित्रायन प्रकाशन आदर्श कॉलोनी, भोपा रोड मुजफ्फर नगर. (1997),. पृ० 66–73

13. मिश्रा श्याम जी कृष्ण – बुंदेलखण्ड में गुसांई सत्ता के उदय एवं पतन का इतिहास – शोध प्रबन्ध, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झांसी (2002), पृ. 41–45